इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता और निगोद का दुःख

(तिर्यंच गति के दुख)

fppt.com

तास भ्रमन की है बहु कथा, पै कछु कहूँ कही मुनि यथा ।
काल अनन्त निगोद मँझार, वीत्यो एकेन्द्री तन धार ॥4 ॥

- तास= उस संसार में
- भ्रमन की= भटकने की
- बहु= बड़ी
- पै= तथापि
- कछु= थोड़ी-सी
- कहूँ= कहता हूँ
- कही= कही है
- मुनि= पूर्वाचार्यों ने
- यथा= जैसी
- निगोद मँझार= निगोद में
- वीत्यो= व्यतीत हुआहै ।
- एकेन्द्री= एकेन्द्रिय जीव के
- तन= शरीर
- धार= धारण करके

fppt.com

तास भ्रमन की है बहु कथा, पै कछु कहूँ कही मुनि यथा ।
काल अनन्त निगोद मँझार, वीत्यो एकेन्द्री तन धार ॥4 ॥

- संसार में जन्म-मरण धारण करने की कथा बहुत बड़ी है ।
- तथापि जिसप्रकार पूर्वाचार्यों ने अपने अन्य ग्रन्थों में कही है, तदनुसार मैं (दौलतराम) भी इस ग्रन्थ में थोड़ी-सी कहता हूँ
- इस जीव ने नरक से भी निकृष्ट निगोद में
- एकेन्द्रिय जीव के शरीर धारण किये अर्थात् साधारण वनस्पतिकाय में उत्पन्न होकर वहाँ अनंतकाल व्यतीत किया है ॥4 ॥

fppt.com

तिर्यंच के भेद

१ इन्द्रिय

- स्पर्शन

२ इन्द्रिय

- स्पर्शन, रसना

३ इन्द्रिय

- स्पर्शन, रसना, घ्राण

४ इन्द्रिय

- स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु

५ इन्द्रिय

- स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण

fppt.com

एकेन्द्रिय

- पृथ्वी
- जल
- अग्नि
- वायु
- वनस्पति

fppt.com

वनस्पति

साधारण

जिस शरीर के स्वामी अनंत जीव होते हैं

सूक्ष्म

बादर

प्रत्येक

जिस शरीर का स्वामी एक जीव होता है

बादर

fppt.com

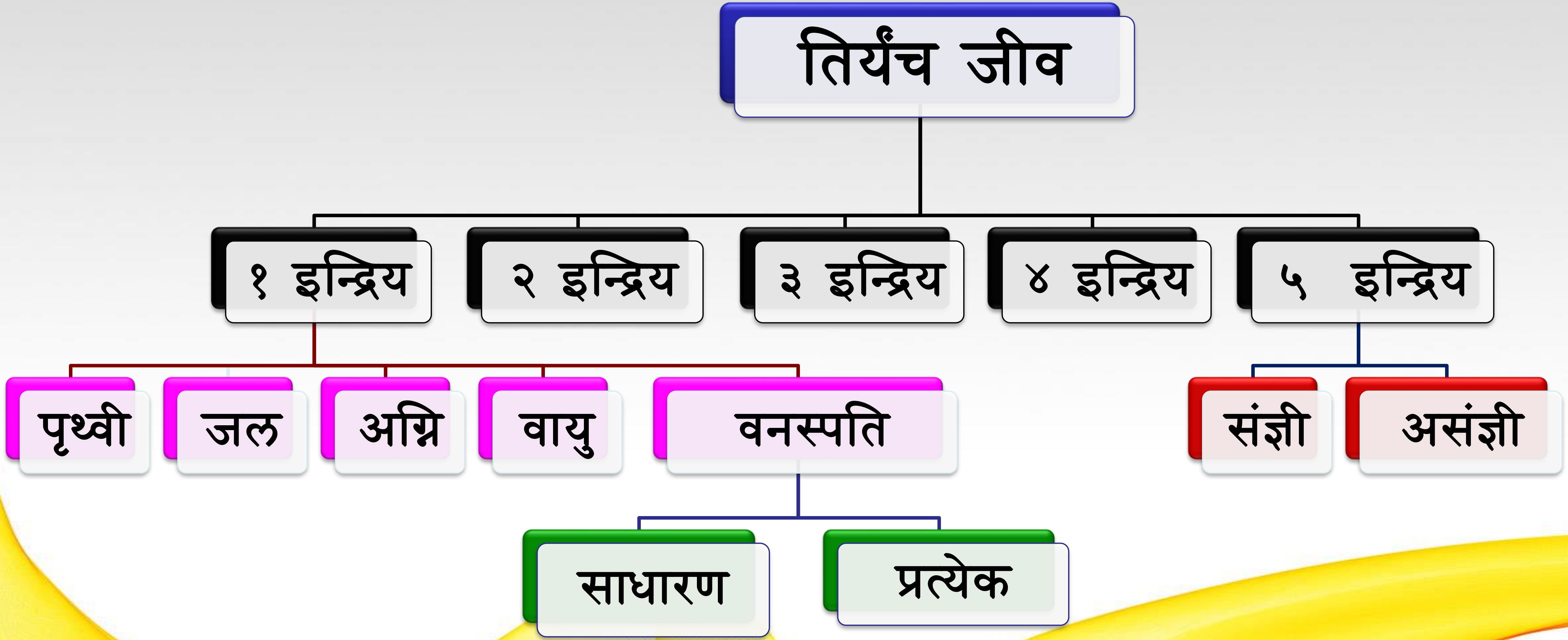
तिर्यंच जीव
१ इन्द्रिय
२ इन्द्रिय
३ इन्द्रिय
४ इन्द्रिय
५ इन्द्रिय
पृथ्वी
जल
अग्नि
वायु
वनस्पति
संज्ञी
असंज्ञी
साधारण
प्रत्येक

fppt.com

निगोद (साधारण जीव) किसे कहते हैं?

नि =

अनन्तपना है निश्चित जिनका, ऐसे जीवों को

गो =

एक ही क्षेत्र

द=

देता है

अर्थात् जो अनन्त जीवों को एक ही आवास दे उसको निगोद कहते हैं

जिनके शरीर, आहार, श्वासोच्छ्वास, जीवन-मरण एक साथ होता है वे निगोदिया जीव कहलाते हैं

निगोद(साधारण) के भेद:

नित्य निगोद

- जिसने अनादि काल से अभी तक त्रस पर्याय प्राप्त नहीं की है

इतर निगोद

- जो देव, नारकी, तिर्यंच और मनुष्यों में उत्पन्न होकर पुन: निगोद में उत्पन्न होते हैं
- इसका दूसरा नाम चतुर्गति निगोद भी है

fppt.com

पंचगोलक में निगोद शरीर

स्कंध:	• सुई की १ नोंक पर १ स्कंध
अण्डर:	• १ स्कंध में असंख्यात लोक प्रमाण अण्डर
आवास:	• १ अण्डर में असंख्यात लोक प्रमाण आवास
पुलवि:	• १ आवास में असंख्यात लोक प्रमाण पुलवि
निगोद शरीर:	• १ पुलवि में असंख्यात लोक प्रमाण निगोद शरीर
जीव:	• १ निगोद शरीर में अनंत निगोदिया जीव

fppt.com

- 1 निगोद शरीर में = अनंतानंत जीव
- 1 पुलवि में = असंख्यात लो प्र x अनंतानंत जीव
- 1 आवास में = असंख्यात लो प्र x (असंख्यात लो प्र x अनंतानंत जीव)
- 1 अण्डर में = असंख्यात लो प्र x (असंख्यात लो प्र x असंख्यात लो प्र x अनंतानंत जीव)
- 1 स्कंध में = असंख्यात लो प्र x (असंख्यात लो प्र x असंख्यात लो प्र x असंख्यात लो प्र x अनंतानंत जीव)

fppt.com

उदा. के लिये माना - अनंतानंत जीव =100, असंख्यात लो प्र = 2

- 1 निगोद शरीर में = 100
- 1 पुलवि में = 2 x 100= 200
- 1 आवास में = 2 x 200=400
- 1 अण्डर में = 2 x 400=800
- 1 स्कंध में = 2 x 800=1600 निगोदिया जीव

fppt.com

पंचगोलक में निगोद शरीर

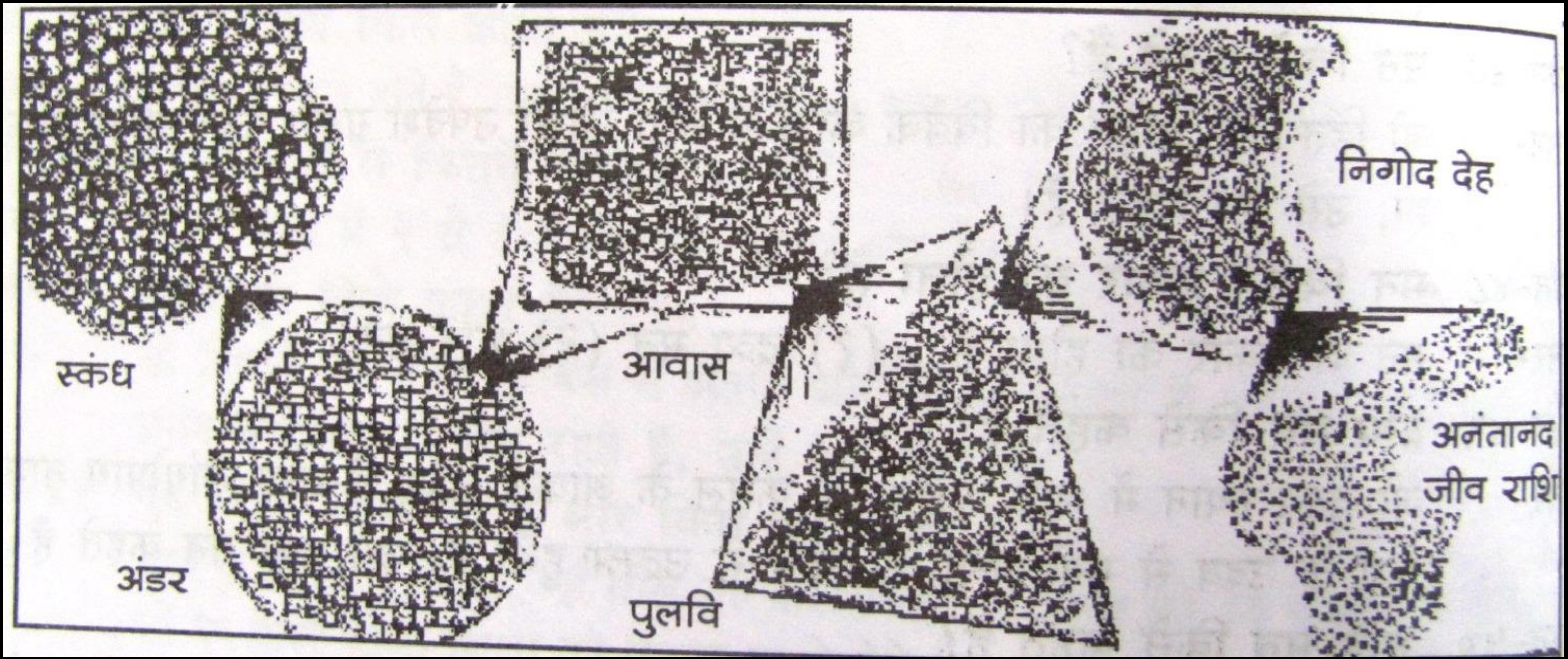

fppt.com

निगोद का दुःख और
वहाँ से निकलकर प्राप्त की हुई पर्यायें

fppt.com

एक श्वास में अठदस बार, जन्म्यो मरय्यो भरय्यो दुखभार ।
निकसि भूमि जल पावक भयो, पवन प्रत्येक वनस्पति थयो ॥5॥

- एक श्वास में= एक साँस में
- अठदस बार= अठारह बार
- जन्म्यो= जनमा
- मरय्यो= मरा
- दुखभार= दुःखों के समूह
- भरय्यो= सहन किये
- निकसि= निकलकर
- भूमि= पृथ्वीकायिक जीव
- जल= जलकायिक जीव
- पावक= अग्निकायिक जीव
- भयो= हुआ
- पवन= वायुकायिक जीव
- प्रत्येक वनस्पति= प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीव
- थयो= हुआ

fppt.com

एक श्वास में अठदस बार, जन्म्यो मरय्यो भरय्यो दुखभार ।
निकसि भूमि जल पावक भयो, पवन प्रत्येक वनस्पति थयो ॥5॥

- निगोद साधारण वनस्पति में इस जीव ने एक श्वासमात्र (जितने) समय में अठारह बार जन्म और मरण करके भयंकर दुःख सहन किये हैं
- और वहाँ से निकलकर पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक तथा प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीव के रूप में उत्पन्न हुआ ॥5 ॥

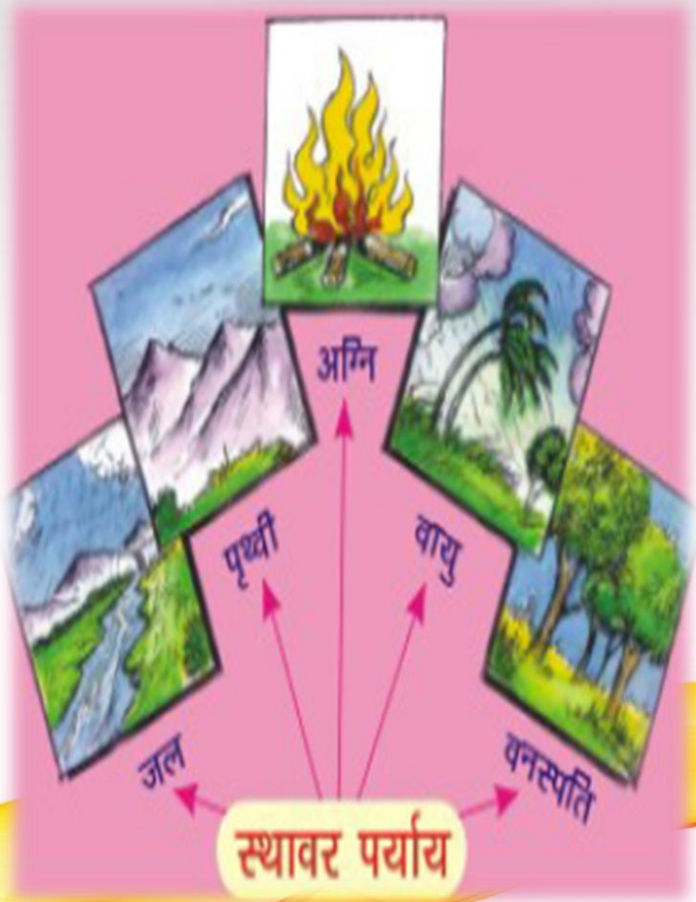

fppt.com

श्वास

- 48 Minutes में 3773 श्वास होते हैं।
- तो 1 Minute में 78.60 श्वास होते हैं
    - (3773 / 48)
- याने 1 श्वास = 0.76 seconds !!
    - (60 / 78.60)

0.76 seconds में 18 बार जीवन-मरण हो जाता है!!

fppt.com

तथ्यः

- सारे निगोदिया जीव श्वास के 18वें भाग में जन्म-मरण नहीं करते हैं
- केवल अपर्याप्त निगोदिया जीव श्वास के 18वें भाग में जन्म-मरण करते हैं
- अन्य पर्याप्तक निगोदिया जीवों की आयु अधिकतम अन्तर्मुहुर्त तक की होती है
- नित्य निगोद से निकलकर यह जीव स्थावरों में पैदा होता है
- लेकिन स्थावर में ही पैदा हो, ऐसा नियम नहीं है. अन्य त्रस जीवों में भी सीधे पैदा हो सकता है

fppt.com

पर्याप्त - अपर्याप्त जीव

पर्याप्त

- जीव की शक्ति की पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं| जिनकी पर्याप्ति पूर्ण होती है, उसे पर्याप्त जीव कहते हैं |

अपर्याप्त

- जो अपना विकास (development) पूर्ण नहीं करेगा और श्वास के अठारहवें भाग (अन्तर्मुहूर्त) में ही मरण को प्राप्त होते हैं|

fppt.com

तिर्यंचगति में त्रस पर्याय की दुर्लभता और उसका दुःख

fppt.com

दुर्लभ लहि ज्यों चिन्तामणि, त्यों पर्याय लही त्रसतणी।
लट पिपील अलि आदि शरीर, धर धर मरय्यो सही बहु पीर॥6॥

- दुर्लभ= कठिनाई से
- लहि= प्राप्त होता है
- ज्यों= जिसप्रकार
- चिन्तामणि= चिन्तामणि रत्न
- त्यों= उसीप्रकार
- त्रसतणी= त्रस की
- लट= इल्ली
- पिपील= चींटी
- अलि= भँवरा
- आदि= इत्यादि के
- धर धर= बारम्बार धारण करके
- मरय्यो= मरण को प्राप्त हुआ
- बहु पीर= अत्यन्त पीड़ा
- सही= सहन की

fppt.com

दुर्लभ लहि ज्यों चिन्तामणि, त्यों पर्याय लही त्रसतणी।
लट पिपील अलि आदि शरीर, धर धर मरय्यो सही बहु पीर॥6॥

- जिसप्रकार चिन्तामणि रत्न बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है,
- उसीप्रकार इस जीव ने त्रस की पर्याय बड़ी कठिनता से प्राप्त की ।
- उस त्रस पर्याय में भी लट (इल्ली) आदि दो इन्द्रिय जीव, चींटी आदि तीन इन्द्रिय जीव और भँवरा आदि चार इन्द्रिय जीव के शरीर धारण करके मरा और अनेक दुःख सहन किये ॥6 ॥

fppt.com

चिन्तामणि रत्न =

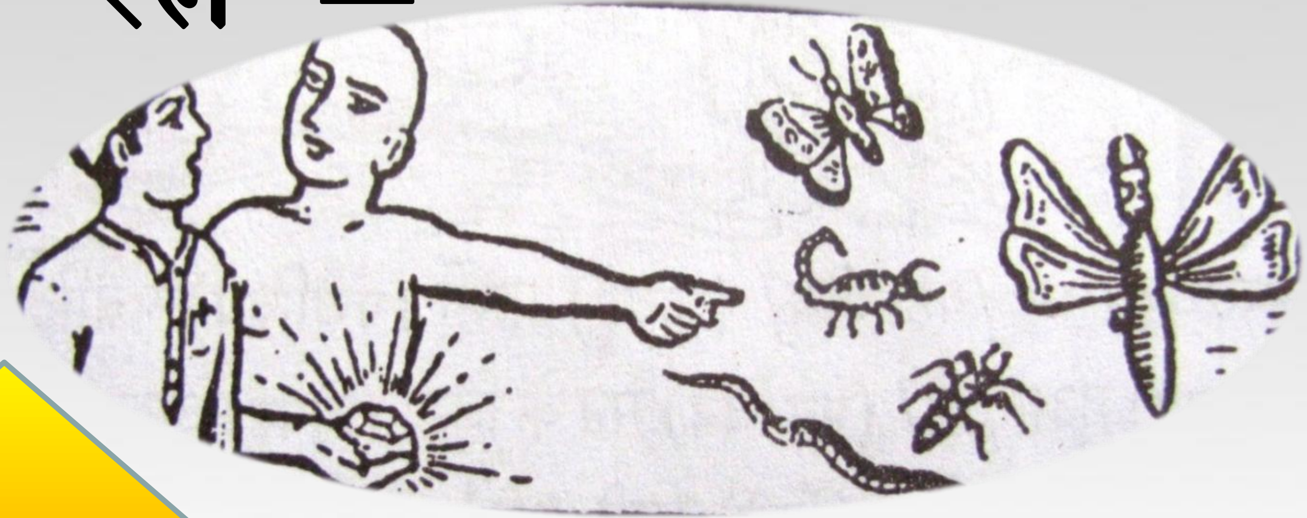

चिन्तामणि रत्न = जो
आप मन में चिन्तित
करोगे वह आपको
मिल जायेगा

fppt.com

त्रस कौन हैं ?

- 5 इंद्रिय जीव - हाथी, शेर, कबूतर, आदि पशु पक्षी
- 4 इंद्रिय जीव – भंवरा, मच्छर
- 3 इंद्रिय जीव – चीटीं
- 2 इंद्रिय जीव - लट

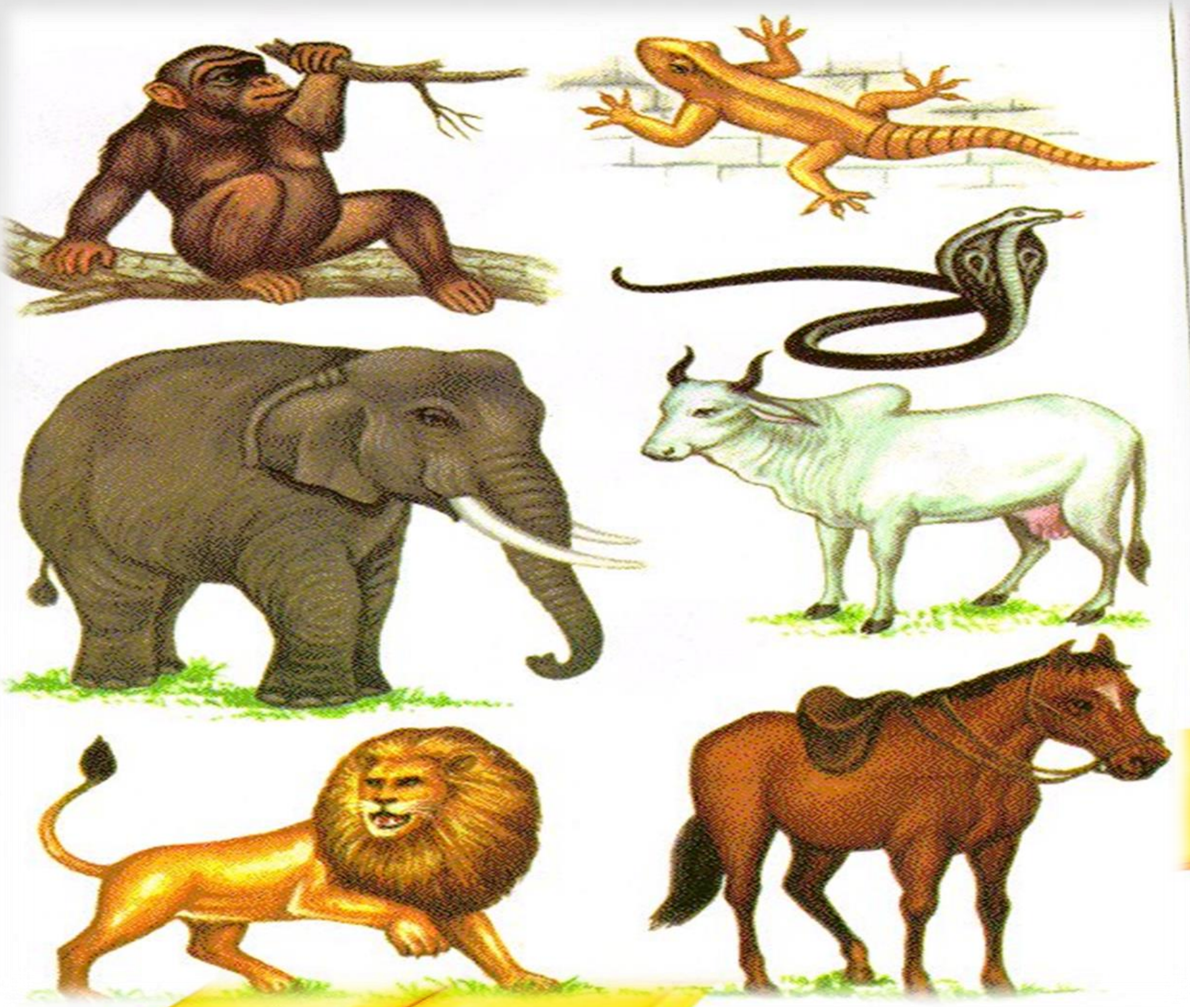

fppt.com

तिर्यंचगति में असंज्ञी तथा संज्ञी के दुःख

fppt.com

कबहूँ पंचेन्द्रिय पशु भयो, मन बिन निपट अज्ञानी थयो ।
सिंहादिक सैनी ह्वै क्रूर, निबल पशु हति खाये भूर ॥7॥

- कबहूँ= कभी
- पशु= तिर्यंच
- भयो= हुआ
- मन बिन= मन के बिना
- निपट= अत्यन्त
- अज्ञानी= मूर्ख
- थयो= हुआ
- सैनी= संज्ञीं
- सिंहादिक= सिंह आदि
- ह्वै= होकर
- क्रूर= क्रूर जीव
- निबल= अपने से निर्बल,
- हति= मार-मारकर
- भूर= अनेक

fppt.com

कबहूँ पंचेन्द्रिय पशु भयो, मन बिन निपट अज्ञानी थयो ।
सिंहादिक सैनी है क्रूर, निबल पशु हति खाये भूर ॥7॥

- यह जीव कभी पंचेन्द्रिय असंज्ञी पशु भी हुआ
- तो मनरहित होने से अत्यन्त अज्ञानी रहा;
- और कभी संज्ञी हुआ तो सिंह आदि क्रूर-निर्दय होकर, अनेक निर्बल जीवों को मार-मारकर खाया तथा घोर अज्ञानी हुआ ॥7॥

fppt.com

मन

भाव मन

- हित अहित का विचार,शिक्षा और उपदेश ग्रहण करने की शक्ति सहित ज्ञान विशेष

द्रव्य मन

- हृदय स्थान में ८ पंखुड़िओं वाले कमल के आकार समान पुद्गल पिण्ड

fppt.com

असंज्ञी के दुख के कारण

- विचार शक्ति से शून्य
- उपदेश को ग्रहण करने की शक्ति नहीं
- भाषा ज्ञान नहीं
- ज्ञान का क्षयोपशम अल्प
- तीव्र मोह
- सम्यक्त्व की प्राप्ति संभव नहीं
- देह के छेदन भेदन संबंधी दुख
- कषायों से दुख

fppt.com

सैनी हो करके भी क्या किया?

- परिणाम विशुद्ध नहीं हुए
- क्रूर होकर अन्य जीवों का घात कर तीव्र संक्लेश परिणामों से अत्यंत दुखी हुआ
- भविष्य के लिये तीव्र पाप का बंध किया

fppt.com

तिर्यंचगति में निर्बलता तथा दुःख

fppt.com

कबहूँ आप भयो बलहीन, सबलनि करि खायो अतिदीन ।
छेदन भेदन भूख पियास, भार-वहन,हिम, आतप त्रास॥8॥
बध बंधन आदिक दुख घने, कोटि जीभ तैं जात न भने ।

- कबहूँ= कभी
- आप= स्वयं
- भयो= हुआ
- बलहीन= निर्बल
- सबलनि करि= अपने से बलवान प्राणियों द्वारा
- खायो= खाया गया
- अतिदीन= असमर्थ होने से
- छेदन= छेदा जाना,
- भेदन= भेदा जाना,
- भार-वहन= बोझ ढोना,
- हिम= ठण्ड
- आतप= गर्मी
- त्रास= दुःख सहन किये
- वध= मारा जाना,
- बंधन= बँधना
- आदिक= आदि
- घने= अनेक
- कोटि= करोड़ों
- जीभतैं= जीभों से
- जात न भने = नहीं कहे जा सकते

fppt.com

कबहूँ आप भयो बलहीन, सबलनि करि खायो अतिदीन ।
छेदन भेदन भूख पियास, भार-वहन,हिम,आतप त्रास॥8॥
बध बंधन आदिक दुख घने, कोटि जीभ तैं जात न भने ।

- जब यह जीव तिर्यंचगति में किसी समय निर्बल पशु हुआ तो
- स्वयं असमर्थ होने के कारण अपने से बलवान प्राणियों द्वारा खाया गया
- तथा उस तिर्यंचगति में छेदा जाना, भेदा जाना, भूख, प्यास, बोझ ढोना, ठण्ड, गर्मी आदि के दुःख भी सहन किये ॥8॥
- इस जीव ने तिर्यंचगति में मारा जाना, बँधना आदि अनेक दुःख सहन किये;
- जो करोड़ों जीभों से भी नहीं कहे जा सकते ॥

fppt.com

संज्ञी तिर्यंच के दुख

- छेदन
- भेदन
- भूख
- प्यास
- बोझा ढोना
- शीत
- उष्णता
- वध
- बंधन

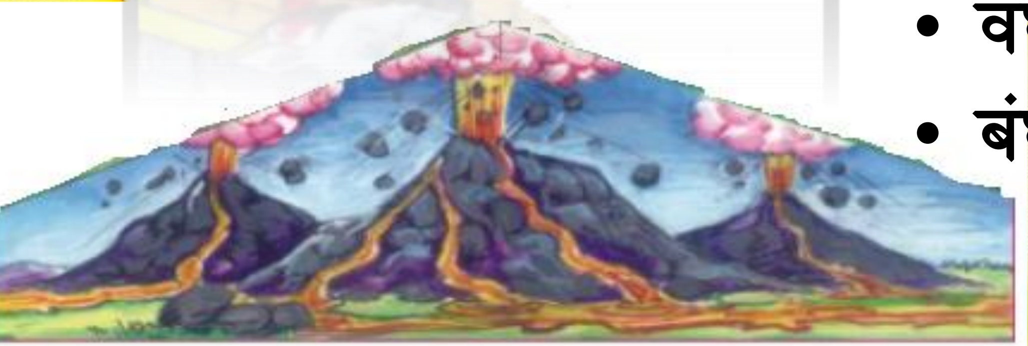

fppt.com

संज्ञी तिर्यंच के दुख

छेदन	• कान, नाक,ओष्ठ आदि अंगों को छेदना
भेदन	• अंगो को भेदना
भूख-प्यास	• खाना पीने से रोकना, कम देना
शीत-उष्णता	• ठण्डी- गर्मी का दुख
बंधन	• बांधना, बंदिगृह,पिंजरें में डालना, मजबूत बंधन से बांधना
पीड़न	• लात, घूमका, लाठी, चाबुक आदि से मारना
भार-वहन	• पशुओं पर अत्यधिक बोझ लादना
वध	• वध कर देना

fppt.com

तिर्यंच के दुःख की अधिकता और नरकगति की प्राप्ति का कारण

fppt.com

अति संक्लेश भावतैं मरय्यो, घोर श्वभ्रसागर में परय्यो॥9॥

- अति संक्लेश= अत्यन्त बुरे
- भावतैं= परिणामों से
- मरय्यो= मरकर
- घोर= भयानक
- श्वभ्रसागर में= नरकरूपी समुद्र में
- परय्यो= जा गिरा ।

fppt.com

अति संक्लेश भावतैं मरय्यो, घोर श्वभ्रसागर में परय्यो ॥9॥

- अंत में इतने बुरे परिणामों (आर्तध्यान) से मरा कि
- जिसे बड़ी कठिनता से पार किया जा सके ऐसे समुद्र-समान घोर नरक में जा पहुँचा ॥9 ॥

fppt.com

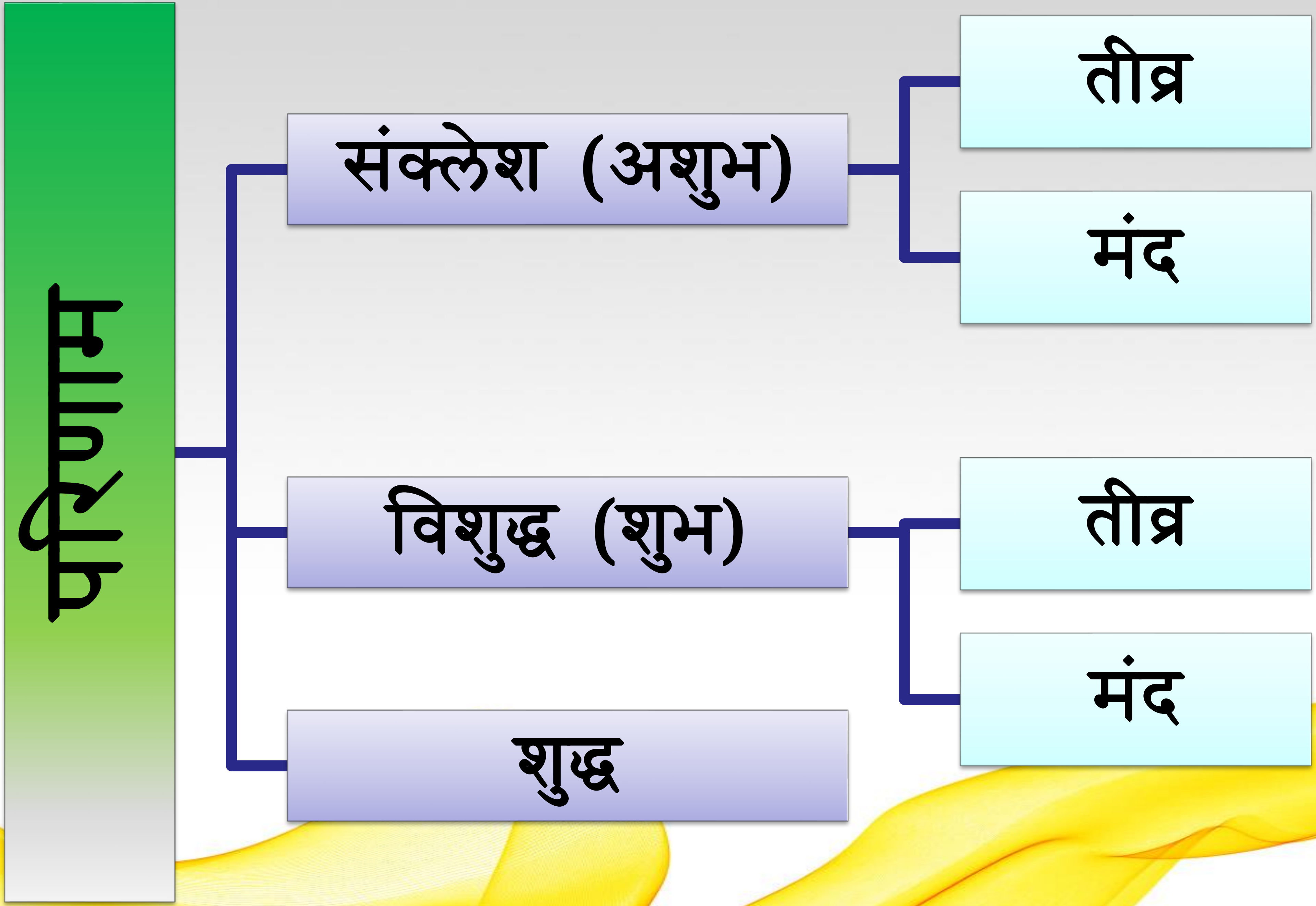

fppt.com

संक्लेश परिणाम

1. मोहरूप परिणाम
2. विषयानुराग रूप परिणाम
3. द्वेष-रूप परिणाम (अशुभ परिणाम)

fppt.com

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, श्री जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष, तत्त्वार्थसूत्रजी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎: 0731-2410880

fppt.com